



Santosh Kumar Dubey

11 Oct 1984

07:10 PM

Buxur

Model: Web-MyKundli

Order No: 119547801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 11/10/1984
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 19:10:00 घंटे
इष्ट _____: 33:17:59 घटी
स्थान _____: Buxur
राज्य _____: Bihar
देश _____: India

अक्षांश _____: 25:35:00 उत्तर
रेखांश _____: 84:00:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:06:00 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 19:16:00 घंटे
वेलान्तर _____: 00:13:16 घंटे
साम्पातिक काल _____: 20:37:19 घंटे
सूर्योदय _____: 05:50:48 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:30:23 घंटे
दिनमान _____: 11:39:35 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 24:46:30 कन्या
लग्न के अंश _____: 27:01:51 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मेष - मंगल
राशि-स्वामी _____: मेष - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: अश्विनी - 4
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: वज्र
करण _____: तैत्तिल
गण _____: देव
योनि _____: अश्व
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: ला-लाखन
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1906	आश्विन	19
पंजाबी	संवत : 2041	आश्विन	26
बंगाली	सन् : 1391	आश्विन	25
तमिल	संवत : 2041	पुरुटासी	26
केरल	कोल्लम : 1160	कन्नी	25
नेपाली	संवत : 2041	आश्विन	26
चैत्रादि	संवत : 2041	कार्तिक	कृष्ण 1
कार्तिकादि	संवत : 2041	आश्विन	कृष्ण 1

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 1
 तिथि समाप्ति काल _____ : 07:52:03
 जन्म तिथि _____ : 2
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : अश्विनी
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 21:58:29 घंटे
 जन्म योग _____ : अश्विनी
 सूर्योदय कालीन योग _____ : हर्षण
 योग समाप्ति काल _____ : 19:05:24 घंटे
 जन्म योग _____ : वज्र
 सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
 करण समाप्ति काल _____ : 07:52:03 घंटे
 जन्म करण _____ : तैतिल
 भयात _____ : 60:01:40
 भभोग _____ : 67:02:52
 भोग्य दशा काल _____ : केतु 0 वर्ष 8 मा 25 दि

घात चक्र

मास _____ : कार्तिक
 तिथि _____ : 1-6-11
 दिन _____ : रविवार
 नक्षत्र _____ : मघा
 योग _____ : विष्कुम्भ
 करण _____ : बव
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : सिंह
 लग्न _____ : मेष
 सूर्य _____ : कर्क
 चन्द्र _____ : मेष
 मंगल _____ : सिंह
 बुध _____ : वृष
 गुरु _____ : कन्या
 शुक्र _____ : तुला
 शनि _____ : मिथुन
 राहु _____ : वृश्चिक

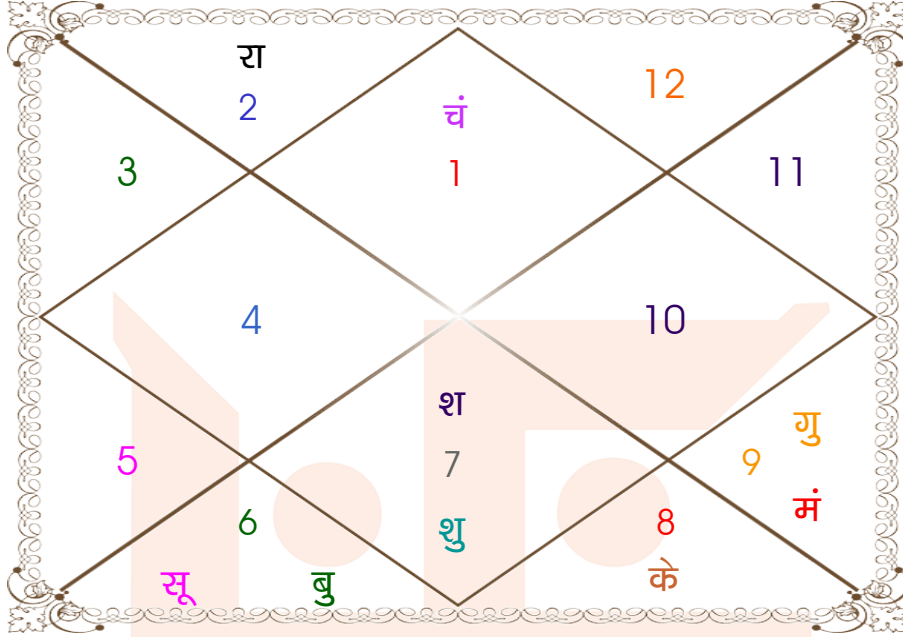


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

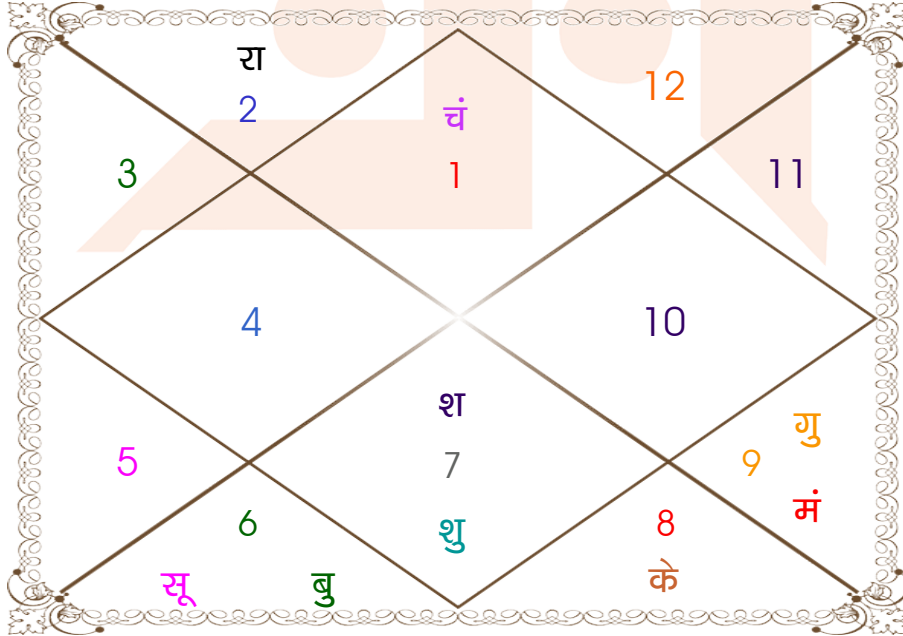


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

	चं ल	रा	
गु मं	के	श शु	बु सू

लग्न कुण्डली

रा	चं ल	
सू बु	शु श	मं गु के

विंशोत्तरी
केतु 0वर्ष 8मा 25दि
केतु

11/10/1984

07/07/2098

केतु	07/07/1985
शुक्र	07/07/2005
सूर्य	07/07/2011
चन्द्र	07/07/2021
मंगल	07/07/2028
राहु	07/07/2046
गुरु	07/07/2062
शनि	07/07/2081
बुध	07/07/2098

योगिनी
भ्रामरी 0वर्ष 5मा 1दि
भद्रिका

14/03/2021

14/03/2026

भद्रिका	22/11/2021
उल्का	23/09/2022
सिद्धा	13/09/2023
संकटा	23/10/2024
मंगला	12/12/2024
पिंगला	24/03/2025
धान्या	23/08/2025
भ्रामरी	14/03/2026

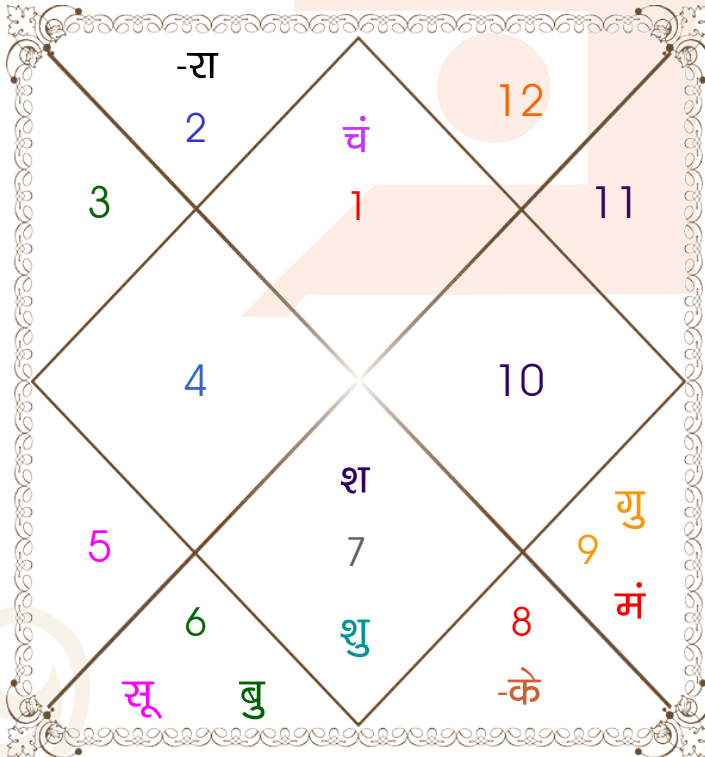
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	27:01:51	413:38:54	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	सूर्य	---
सूर्य			कन्या	24:46:30	00:59:20	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	सम राशि
चंद्र			मेष	11:55:59	11:57:47	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	बुध	सम राशि
मंगल			धनु	10:45:04	00:42:04	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	मित्र राशि
बुध	अ		कन्या	25:23:03	01:42:45	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	स्वराशि
गुरु			धनु	12:13:19	00:07:22	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	स्वराशि
शुक्र			तुला	25:47:40	01:13:12	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	केतु	स्वराशि
शनि			तुला	21:50:29	00:06:39	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	शनि	उच्च राशि
राहु	व		वृष	04:12:49	00:03:21	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	04:12:49	00:03:21	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	मित्र राशि
हर्ष			वृश्चि	17:07:02	00:02:35	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	---
नेप			धनु	05:17:18	00:01:01	मूल	2	19	गुरु	केतु	मंगल	---
प्लूटो			तुला	07:52:40	00:02:22	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	राहु	---
दशम भाव			मक	13:17:18	--	श्रवण	--	22	शनि	चंद्र	राहु	--

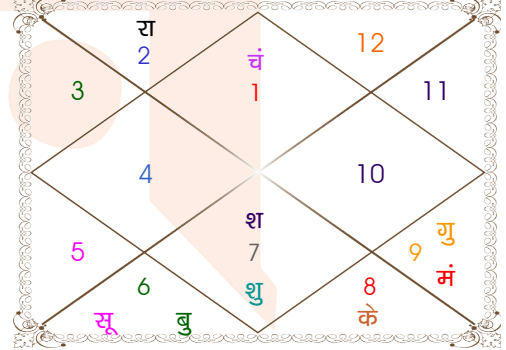
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:38:24

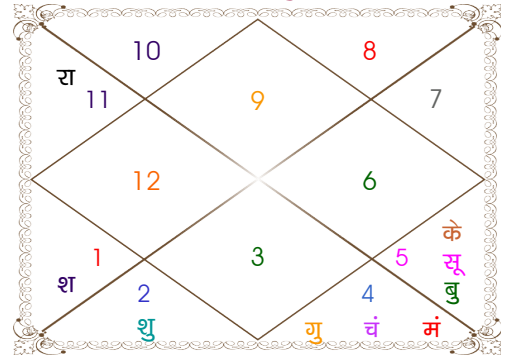
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मेष 09:44:25	मेष 27:01:51
2	वृष 09:44:25	वृष 22:27:00
3	मिथुन 05:09:34	मिथुन 17:52:09
4	कर्क 00:34:43	कर्क 13:17:18
5	सिंह 00:34:43	सिंह 17:52:09
6	कन्या 05:09:34	कन्या 22:27:00
7	तुला 09:44:25	तुला 27:01:51
8	वृश्चिक 09:44:25	वृश्चिक 22:27:00
9	धनु 05:09:34	धनु 17:52:09
10	मकर 00:34:43	मकर 13:17:18
11	कुम्भ 00:34:43	कुम्भ 17:52:09
12	मीन 05:09:34	मीन 22:27:00

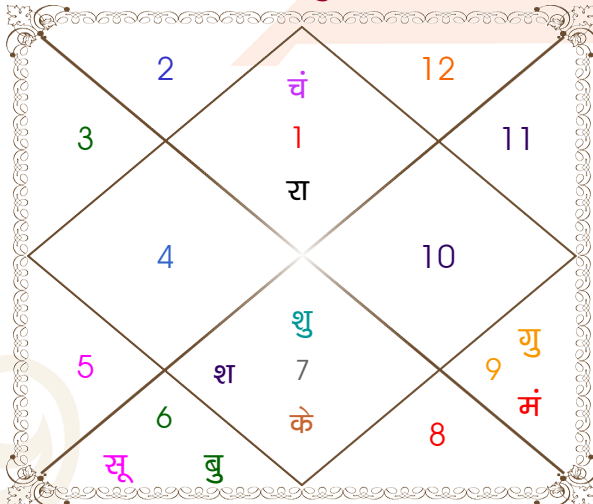
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष 27:01:51	
2	वृष 24:30:04	
3	मिथुन 18:30:56	
4	कर्क 13:17:18	
5	सिंह 12:24:30	
6	कन्या 18:07:15	
7	तुला 27:01:51	
8	वृश्चिक 24:30:04	
9	धनु 18:30:56	
10	मकर 13:17:18	
11	कुम्भ 12:24:30	
12	मीन 18:07:15	

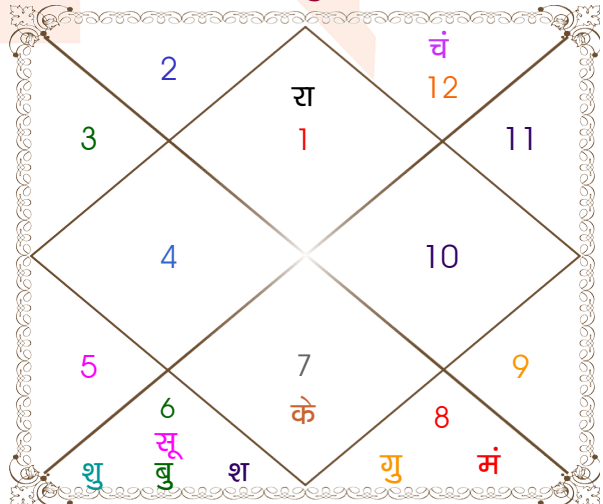
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 0 वर्ष 8 मास 25 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
11/10/1984	07/07/1985	07/07/2005	07/07/2011	07/07/2021
07/07/1985	07/07/2005	07/07/2011	07/07/2021	07/07/2028
00/00/0000	शुक्र 05/11/1988	सूर्य 24/10/2005	चंद्र 07/05/2012	मंगल 03/12/2021
00/00/0000	सूर्य 06/11/1989	चंद्र 25/04/2006	मंगल 06/12/2012	राहु 21/12/2022
00/00/0000	चंद्र 07/07/1991	मंगल 31/08/2006	राहु 07/06/2014	गुरु 27/11/2023
00/00/0000	मंगल 05/09/1992	राहु 26/07/2007	गुरु 07/10/2015	शनि 05/01/2025
00/00/0000	राहु 06/09/1995	गुरु 13/05/2008	शनि 07/05/2017	बुध 02/01/2026
00/00/0000	गुरु 07/05/1998	शनि 25/04/2009	बुध 06/10/2018	केतु 01/06/2026
00/00/0000	शनि 07/07/2001	बुध 01/03/2010	केतु 07/05/2019	शुक्र 01/08/2027
11/10/1984	बुध 07/05/2004	केतु 07/07/2010	शुक्र 05/01/2021	सूर्य 07/12/2027
बुध 07/07/1985	केतु 07/07/2005	शुक्र 07/07/2011	सूर्य 07/07/2021	चंद्र 07/07/2028

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
07/07/2028	07/07/2046	07/07/2062	07/07/2081	07/07/2098
07/07/2046	07/07/2062	07/07/2081	07/07/2098	12/10/2104
राहु 20/03/2031	गुरु 24/08/2048	शनि 10/07/2065	बुध 03/12/2083	केतु 03/12/2098
गुरु 12/08/2033	शनि 08/03/2051	बुध 19/03/2068	केतु 30/11/2084	शुक्र 02/02/2100
शनि 18/06/2036	बुध 12/06/2053	केतु 28/04/2069	शुक्र 01/10/2087	सूर्य 10/06/2100
बुध 06/01/2039	केतु 19/05/2054	शुक्र 27/06/2072	सूर्य 06/08/2088	चंद्र 09/01/2101
केतु 24/01/2040	शुक्र 17/01/2057	सूर्य 09/06/2073	चंद्र 05/01/2090	मंगल 07/06/2101
शुक्र 24/01/2043	सूर्य 06/11/2057	चंद्र 09/01/2075	मंगल 03/01/2091	राहु 26/06/2102
सूर्य 19/12/2043	चंद्र 08/03/2059	मंगल 18/02/2076	राहु 22/07/2093	गुरु 02/06/2103
चंद्र 19/06/2045	मंगल 11/02/2060	राहु 25/12/2078	गुरु 28/10/2095	शनि 11/07/2104
मंगल 07/07/2046	राहु 07/07/2062	गुरु 07/07/2081	शनि 07/07/2098	बुध 12/10/2104

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 0 वर्ष 8 मा 24 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - बुध 05/01/2025 02/01/2026	मंगल - केतु 02/01/2026 01/06/2026	मंगल - शुक्र 01/06/2026 01/08/2027	मंगल - सूर्य 01/08/2027 07/12/2027	मंगल - चंद्र 07/12/2027 07/07/2028
बुध 26/02/2025 केतु 19/03/2025 शुक्र 18/05/2025 सूर्य 05/06/2025 चंद्र 05/07/2025 मंगल 26/07/2025 राहु 19/09/2025 गुरु 06/11/2025 शनि 02/01/2026	केतु 11/01/2026 शुक्र 05/02/2026 सूर्य 12/02/2026 चंद्र 25/02/2026 मंगल 06/03/2026 राहु 28/03/2026 गुरु 17/04/2026 शनि 10/05/2026 बुध 01/06/2026	शुक्र 11/08/2026 सूर्य 01/09/2026 चंद्र 06/10/2026 मंगल 31/10/2026 राहु 03/01/2027 गुरु 01/03/2027 शनि 07/05/2027 बुध 07/07/2027 केतु 01/08/2027	सूर्य 07/08/2027 चंद्र 18/08/2027 मंगल 25/08/2027 राहु 13/09/2027 गुरु 30/09/2027 शनि 21/10/2027 बुध 08/11/2027 केतु 15/11/2027 शुक्र 07/12/2027	चंद्र 24/12/2027 मंगल 06/01/2028 राहु 07/02/2028 गुरु 06/03/2028 शनि 09/04/2028 बुध 09/05/2028 केतु 21/05/2028 शुक्र 26/06/2028 सूर्य 07/07/2028
राहु - राहु 07/07/2028 20/03/2031	राहु - गुरु 20/03/2031 12/08/2033	राहु - शनि 12/08/2033 18/06/2036	राहु - बुध 18/06/2036 06/01/2039	राहु - केतु 06/01/2039 24/01/2040
राहु 01/12/2028 गुरु 12/04/2029 शनि 15/09/2029 बुध 02/02/2030 केतु 31/03/2030 शुक्र 12/09/2030 सूर्य 31/10/2030 चंद्र 21/01/2031 मंगल 20/03/2031	गुरु 15/07/2031 शनि 30/11/2031 बुध 03/04/2032 केतु 24/05/2032 शुक्र 17/10/2032 सूर्य 30/11/2032 चंद्र 11/02/2033 मंगल 03/04/2033 राहु 12/08/2033	शनि 24/01/2034 बुध 21/06/2034 केतु 20/08/2034 शुक्र 10/02/2035 सूर्य 03/04/2035 चंद्र 29/06/2035 मंगल 28/08/2035 राहु 01/02/2036 गुरु 18/06/2036	बुध 28/10/2036 केतु 22/12/2036 शुक्र 26/05/2037 सूर्य 11/07/2037 चंद्र 27/09/2037 मंगल 20/11/2037 राहु 09/04/2038 गुरु 11/08/2038 शनि 06/01/2039	केतु 28/01/2039 शुक्र 02/04/2039 सूर्य 21/04/2039 चंद्र 23/05/2039 मंगल 14/06/2039 राहु 11/08/2039 गुरु 01/10/2039 शनि 01/12/2039 बुध 24/01/2040
राहु - शुक्र 24/01/2040 24/01/2043	राहु - सूर्य 24/01/2043 19/12/2043	राहु - चंद्र 19/12/2043 19/06/2045	राहु - मंगल 19/06/2045 07/07/2046	गुरु - गुरु 07/07/2046 24/08/2048
शुक्र 25/07/2040 सूर्य 18/09/2040 चंद्र 18/12/2040 मंगल 20/02/2041 राहु 03/08/2041 गुरु 27/12/2041 शनि 19/06/2042 बुध 21/11/2042 केतु 24/01/2043	सूर्य 09/02/2043 चंद्र 09/03/2043 मंगल 28/03/2043 राहु 16/05/2043 गुरु 29/06/2043 शनि 20/08/2043 बुध 06/10/2043 केतु 25/10/2043 शुक्र 19/12/2043	चंद्र 02/02/2044 मंगल 05/03/2044 राहु 26/05/2044 गुरु 08/08/2044 शनि 02/11/2044 बुध 19/01/2045 केतु 20/02/2045 शुक्र 22/05/2045 सूर्य 19/06/2045	मंगल 11/07/2045 राहु 06/09/2045 गुरु 28/10/2045 शनि 27/12/2045 बुध 20/02/2046 केतु 14/03/2046 शुक्र 17/05/2046 सूर्य 05/06/2046 चंद्र 07/07/2046	गुरु 19/10/2046 शनि 19/02/2047 बुध 10/06/2047 केतु 25/07/2047 शुक्र 02/12/2047 सूर्य 10/01/2048 चंद्र 15/03/2048 मंगल 29/04/2048 राहु 24/08/2048

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	7
मित्र अंक	2, 7, 8
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20, 29, 38, 47, 56
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

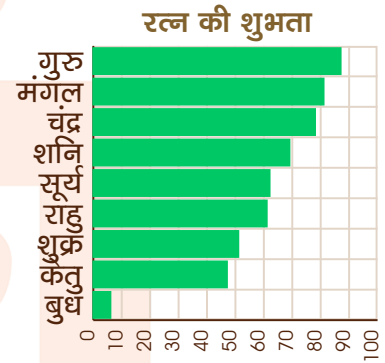


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	87%	भाग्योदय, कम खर्च
मूंगा	मंगल	81%	भाग्योदय, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
मोती	चंद्र	78%	स्वास्थ्य, सुख
नीलम	शनि	69%	दम्पति, व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
माणिक्य	सूर्य	62%	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	61%	धन, दम्पति
हीरा	शुक्र	51%	दम्पति, धन
लहसुनिया	केतु	47%	दुर्घटना, नेष्ट भाग्य
पन्ना	बुध	6%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	07/07/1985	50%	66%	88%	6%	87%	58%	56%	47%	61%
शुक्र	07/07/2005	50%	66%	81%	18%	87%	64%	75%	67%	55%
सूर्य	07/07/2011	75%	84%	88%	6%	93%	28%	56%	47%	22%
चंद्र	07/07/2021	69%	91%	81%	18%	87%	51%	69%	47%	22%
मंगल	07/07/2028	69%	84%	94%	0%	93%	51%	69%	47%	55%
राहु	07/07/2046	50%	66%	69%	6%	87%	58%	75%	73%	22%
गुरु	07/07/2062	69%	84%	88%	0%	100%	28%	69%	61%	47%
शनि	07/07/2081	50%	66%	69%	18%	87%	58%	81%	67%	22%
बुध	07/07/2098	69%	66%	81%	31%	87%	58%	69%	61%	47%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/12/1984-01/06/1985 17/09/1985-17/12/1987	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
अशुभ
शुभ
अशुभ

क्षेत्र

दुर्घटना
कम खर्च
बुरा स्वास्थ्य
धन
सुख हानि



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराक्रमी एवं उत्साही व्यक्ति हैं अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराक्रम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवक्ता, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान्, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान् होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरु, यात्रा करने का शौकीन, आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी आपको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराक्रमी, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

शुक्र

सप्तमभाव में शुक्र हो तो जातक लोकप्रिय, धनिक, चिन्तित, विवाह के बाद



FUTUREPOINT
Astro Solutions



भाग्योदय, साधुप्रेमी, स्त्री से सुख, कामी, भाग्यवान् गानप्रिय, विलासी, अल्पव्यभिचारी चंचल एवं उदार होता है।

तुला राशि में शुक हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संशयशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(07/07/2021 - 07/07/2028)

मंगल की महादशा 07/07/2021 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 07/07/2028 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल की तृतीय, चतुर्थ और वारहवें भाव पर दृष्टि है। मंगल इस दशा के दौरान अच्छा फल देगा। इसके पूर्व आपकी दस वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपकी यात्रा, कुछ व्यय, आध्यत्मिक उन्नति और सम्भवतः सफलता में कुछ बाधा हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति, समृद्धि और परिवार से सुख की प्राप्ति तथा यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें रोगों और कष्टों से लड़ने की शक्ति होगी। आपमें भरपूर-आत्मविश्वास तथा जीवनी-शक्ति होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आप सरदर्द, संक्रामक बीमारी तथा ज्वर से पीड़ित हो सकते हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। नवम भाव में स्थित होने के कारण मंगल आपको सम्पत्ति, समृद्धि, और सौभाग्य देगा तथा आपको पिता से लाभ मिलेगा। आपको सम्पत्ति, माता से लाभ मिल सकते हैं। किसी शुभ उद्देश्य के लिए व्यय भी हो सकता है। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ हो सकता है। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र लोहा-इस्पात से सम्बद्ध व्यवसाय या पुलिस के कार्य का चयन कर सकते हैं। आपके लिए योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध व्यवसाय लाभदायक हो सकते हैं। तकनीकी कार्य आपके लिये उपयुक्त होगा। आप एक सफल सर्जन हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी और आपकी आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का व्यय हो सकता है। आपको साझेदारी में सावधानी बरतनी चाहिए। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का विदेश से व्यापार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल की महादशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्राएं होंगी। इस दशा के दौरान आपको जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। मंगल की अन्तर्दशा में खास तौर से सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा में आप सफल होंगे और इस दशा में बहुत अच्छा करेंगे। गणित, विधि, इन्जीनियरिंग, विज्ञान तथा तकनीकी के विषय आपके लिए बहुत उपयुक्त होंगे। आपमें आत्मविश्वास होगा और आप कार्य कुशलता

से अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर होगा। आपको आपके बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके जीवनसाथी को सम्बन्धियों से लाभ मिलेगा और अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आपकी माता का आप पर बहुत प्रभाव होगा। आपको उनसे लाभ मिलेगा। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम होगा और सम्पत्ति, सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारी के व्यवसाय में धन की प्राप्ति होगी। आपके बड़े भाई-बहनों को लाभ का अवसर मिलेगा, उनके प्रभावशाली मित्र होंगे और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आपको सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आगे राहु की अन्तर्दशा में कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होगी। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सफल निवेश तथा सट्टे और कुछ परिवर्तन से लाभ होगा। शनि की अन्तर्दशा के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं हो सकती हैं। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ होगा। आगे केतु की अन्तर्दशा में कुछ मानसिक तथा शारीरिक समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और जीवन वृत्ति में उन्नति हो सकती है। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, शक्ति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्रा, व्यय तथा आध्यात्मिक उन्नति होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अंतर्दशा :- मंगल - शनि
(27/11/2023 - 05/01/2025)

आपके लिए मंगल की महादशा 07/07/2021 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 27/11/2023 को प्रारंभ होकर 05/01/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपकी योग्यता की प्रशंसा होगी, प्रोन्नति हो सकती है। उच्च पद मिल सकता है। आप महत्वाकांक्षी और कूटनीतिज्ञ रहेंगे और सम्मान प्राप्त करेंगे। यात्राएं हो सकती हैं और विदेश से लाभ संभव है। विवाह हो सकता है। आप प्रत्येक कार्य में धैर्य और सावधानी का परिचय देंगे। सुविधाओं में वृद्धि होगी, अचल संपत्ति प्राप्त होगी। माता के साथ संबंध उत्तम रहेंगे। घर में शांति रहेगी।

आपके जीवनसाथी को धन और उच्चपद की प्राप्ति होगी। व्यापार के लाभ में वृद्धि होगी। आपके पिता के सम्मान में वृद्धि होगी, वाहन सुख, सफलता और धन का संकेत है। आपकी माता की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी, सब सुविधाएं रहेंगी, जायदाद से आमदनी होगी। आपके भाई-बहन बुद्धिमत्तापूर्ण निवेश से लाभार्जन करेंगे। बड़े भाई-बहनों की यात्रा होगी, संतान से सुख मिलेगा।

आपकी संतान को लक्ष्य प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धन का लाभ होगा। परामर्शदाता और व्यापारी अधिक सक्रिय होंगे, लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। खानपान में परहेज रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ढोजतवैतपदहेण्चसंदमजडंदजतैउंसस;6द्धझ

अंतर्दशा :- मंगल - बुध
(05/01/2025 - 02/01/2026)

आपके लिए मंगल की महादशा 07/07/2021 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 05/01/2025 को प्रारंभ होकर 02/01/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपके उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, उच्चपद प्राप्त होगा। सरकार से लाभ मिल सकता है। शत्रुओं पर मधुरवाणी से विजय मिलेगी। शुभकार्यों पर खर्च बढ़ सकते हैं। व्यापार से, विशेषकर विदेश से लाभ होगा। अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी। सफलता में बाधा आ

सकती है जिसे परिश्रम और कर्मठता से पार कर सकते हैं।

आपके जीवनसाथी के खर्चे बढ़ेंगे। आपके पिता कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। माता को संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। उनके पड़ौसियों से उत्तम संबंध रहेंगे। आपके भाई-बहनों को जायदाद मिल सकती है, शिक्षा उत्तम होगी, अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं, प्रसिद्धि, धन और उच्च पद प्राप्त होंगे।

आपकी संतान भाषण, वाद-विवाद आदि में भाग ले सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, धनागम होगा। परामर्शदाता समृद्ध बनेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ेंगे।

त्वचा और पाचनतंत्र का ध्यान रखना श्रेयस्कर होगा। अरिष्ट से बचाव के लिए दुर्गाजी की आराधना करें।

अंतर्दशा :- मंगल - केतु (02/01/2026 - 01/06/2026)

आपके लिए मंगल की महादशा 07/07/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 02/01/2026 को प्रारंभ होकर 01/06/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में धन का संचय हो सकता है। जीवनसाथी के माध्यम से धन का लाभ होगा। आपकी अंतर्ज्ञान शक्ति उत्तम है। अध्यात्म में रुचि लेंगे। विरासत, वसीयत, उपहार आदि से धनागम हो सकता है। कटु वचन न बोलें, अन्यथा परिवार की शांति भंग हो सकती है। स्वास्थ्यवर्धक, शुद्ध भोजन ही ग्रहण करें। दूसरों पर निर्भरता में कमी करें।

आपके जीवनसाथी के धन का संचय होगा; जीवन में खुशियां मिलेंगी। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता को निवेश से लाभ होगा। आपके भाई-बहन समस्याओं के समाधान में दृढ़संकल्प का परिचय देंगे; उनके परिवारजनों से उत्तम संबंध होंगे, कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी; माता से संबंध उत्तम रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं; उनका घरेलू जीवन सुखी रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सफलता पाने के लिए परिश्रम करेंगे; संचार माध्यम से लाभ हो सकता है। परामर्शदाता और व्यापारी धन कमाएंगे।

मामूली व्याधियों को अनदेखा न करें। घाव, चोट आदि का ठीक से इलाज करवाएं। अरिष्ट से बचाव के लिए कुत्तों को भोजन दें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र
(01/06/2026 - 01/08/2027)**

आपके लिए मंगल की महादशा 07/07/2021 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 01/06/2026 को प्रारंभ होकर 01/08/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आपका विवाहित जीवन सुखी रहेगा; जीवनसाथी के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। व्यापार में लाभ हो सकता है, सौभाग्यशाली होंगे। किसी और को दिया धन वापस आ जाएगा। कला और संगीत में रुचि होगी। उच्चपद और प्रसिद्धि की प्राप्ति होगी। सत्कार्यों में भाग लेंगे और साख में वृद्धि होगी। भौतिक सुख उपलब्ध रहेंगे। समाजसेवा से सुख मिलेगा।

आपके जीवनसाथी का भाग्य उत्तम होगा, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। आपके पिता सुख-सुविधाओं, भूमि और वाहन आदि से युक्त रहेंगे। माता के परिवारजनों और मित्रों से संबंध मधुर रहेंगे। भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी, संतान से सुख मिलेगा, निवेश से लाभ होगा, यात्राएं होगी, जीवनसाथी से सुख मिलेगा।

आपकी संतान की आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। अगर वे सेवारत हैं तो धन कमाएंगे, यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा। परामर्शदाताओं को प्रसिद्धि और धन का संकेत है। व्यापारी धन कमाएंगे। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। उदर रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए लक्ष्मीजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
(01/08/2027 - 07/12/2027)**

आपकी मंगल की महादशा 07/07/2021 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 01/08/2027 को प्रारंभ होकर 07/12/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपकी प्रतिद्वंद्वियों पर विजय होगी। आप स्वस्थ और ऊर्जावान होंगे और सब बाधाओं को पार कर लेंगे। उच्चपद प्राप्त होगा, जीवन में उन्नति होगी। प्रसिद्धि बढ़ेगी। कार्यों में सफलता और प्रसन्नता मिलेगी। औषधियों से संबंधित कार्य में सफलता मिल सकती है। प्रशासनिक क्षमता उत्तम रहेगी। प्राच्य विद्या में रुचि होगी। दूर की यात्रा संभव है या निवास परिवार से दूर हो सकता है।

जीवनसाथी बाधाओं को पार करेंगे और प्रतिद्वंद्वियों पर विजयी होंगे। आपके पिता की साख उत्तम रहेगी। माता की इच्छाएं पूर्ण होंगी। भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम रहेगी, कार्यक्षेत्र

**महादशा :- राहु
(07/07/2028 - 07/07/2046)**

राहु की महादशा 07/07/2028 को आरम्भ और 07/07/2046 को समाप्त होगी।
इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु द्वितीय भाव में बुध की राशि में स्थित है।



इस स्थान से राहु की दृष्टि अष्टम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। आपकी यात्रा तथा व्यय और साझेदारों से लाभ होगा। राहु की इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति का लाभ, उत्तम शिक्षा और सरकार से संभावित आर्थिक लाभ मिलेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली और ऊर्जावान होंगे। किन्तु मौसम में परिवर्तन के कारण गले का रोग, वाइरल बुखार, स्नायविक-दुर्बलता, चर्मरोग आदि मामूली रोग हो सकते हैं। कुछ सतर्कता बरत कर इनमें से कुछ से बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपको पैतृक सम्पत्ति और उपहार में धन की प्राप्ति होगी। सट्टे तथा निवेश में लाभ हो सकता है। जीविका तथा व्यवसाय के लिए वायुयान-संचालन, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, शिक्षण, ट्रेवल एजेंट, वायुसैनिक, लेखा-कार्य, कम्प्यूटर- विज्ञान, प्रकाशन आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, चमड़ा, आयात-निर्यात, कागज, टेलीफोन, इलेक्ट्रॉनिक सामान आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सफलता, पदोन्नति, उच्च सम्मान और आय में वृद्धि होगी। आपको सहकर्मियों का सहयोग और उच्चाधिकारियों की शुभकामना प्राप्त होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उपार्जन तथा लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार और सम्पत्ति की अचानक बाढ़ आएगी। आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है और अप्रत्याशित प्रगति की सम्भावना है।

वाहन, यात्रा जायदाद :

इस दशा के दौरान आपका जीवन सुखमय रहेगा। आपको वाहन की प्राप्ति होगी। जायदाद के लिये भी यह दशा उत्तम है। जमीन-जायदाद में वृद्धि की संभावना है। आपका एक आरामदायक मकान होगा। चन्द्र की महादशा में आपकी छोटी यात्रा और मंगल की महादशा में लम्बी यात्रा होगी। मामूली नुकसान से बचाव के लिये सावधानी बरतें।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी उत्तम तकनीकी शिक्षा होगी। आप परीक्षा तथा प्रतियोगिता में श्रेष्ठता प्राप्त करेंगे। विज्ञान, इन्जीनियरिंग, लेखा-कार्य, वाणिज्य, लेखन, समाचार माध्यम आदि में आपकी रुचि होगी। आप तेज हैं तथा बौद्धिक गतिविधि से सम्बन्धित सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

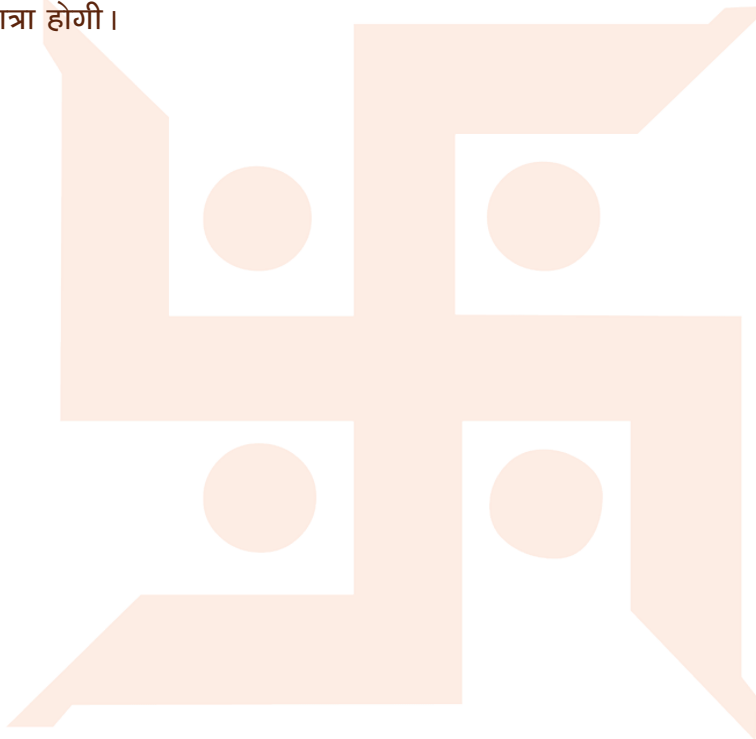
परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आप यदा-कदा परिवार से दूर रहेंगे। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचानक धन मिलेगा, हालाँकि कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या और परिवर्तन हो सकता है। आपकी माता को समृद्धि और सम्पत्ति मिलेगी तथा उनके मित्र प्रभावशाली होंगे जबकि आपके पिता को आदर, सम्पत्ति तथा विरोधियों पर विजय मिलेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कुछ स्वास्थ्य समस्या

होगी, व्यय होगा और विरोधियों तथा प्रतिद्वन्द्वियों के कारण निराशा मिलेगी। आपके बड़े भाई-बहनों को अचल सम्पत्ति, आवास में परिवर्तन तथा जीवन का सुख मिलेगा। इस दशा के दौरान आपको विभिन्न स्रोतों से धन की प्राप्ति तथा जीवन का सुख मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपको सम्पत्ति और सुख की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा में लाभ होगा और मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, सफलता, सम्पत्ति आदि की प्राप्ति और यात्रा होगी। बुध की अन्तर्दशा में शिक्षा, परिवार में सुख और लाभ मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति, सम्पत्ति और सौभाग्य की प्राप्ति होगी जबकि उसके बाद शुरु होने वाली सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान जमीन जायदाद में वृद्धि और माता से सुख मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा होगी और भाई-बहनों से सुख मिलेगा जबकि मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यय, कुछ स्वास्थ्य समस्या और यात्रा होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(07/07/2028 - 20/03/2031)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 07/07/2028 को प्रारंभ होकर 07/07/2046 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 07/07/2028 को प्रारंभ होकर 20/03/2031 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। द्वितीय भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के अष्टम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके झगड़े, या अदालत में खर्चे आदि का संकेत है। आप अधिकारियों को नाराज कर सकते हैं, जिससे धन की हानि होगी। कटु वचन के कारण परिवार में अशांति हो सकती है, जिस कारण आप घर से अधिकतर दूर रहना पसंद कर सकते हैं। आपकी भावमुद्रा बीमार व्यक्ति के समान हो सकती है। नेत्ररोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।